National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040
Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 1387-1388

देवनागरी लिपि का उद्भव एवं विशेषताएं

विनीता शर्मा
शोधकर्त्ता, कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

प्रस्तावना

हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी है। देवनागरी लिपि का जन्म ब्राह्मी लिपि से हुआ है। ब्राह्मी संसार की सबसे प्राचीन ध्वनि लिपि है। गौरीशंकर हरीचन्द ओझा के अनुसार ब्राह्मी लिपि का आविष्कार आर्यों ने ही किया था। वैदिक संस्कृत और संस्कृत इसी लिपि में लिखी जाती थीं। लिपि की आवश्यकता है क्योकि

1. संज्ञानात्मक कारक रचनात्मकता और भाषा की क्षमता इसमें शामिल है।
2. गैर–संज्ञानात्मक कारक इसमें स्वयं अवधारणा, समायोजन और आकांक्षा के स्तर जैसे चर शामिल हैं, प्रेरणा, योग्यता, चिंता मूल्य और आत्मविश्वास की आवश्यकता होती है।
3. गृह पर्यावरणीय कारक इसमें जनसांख्यिकीय चर शामिल हैं सामाजिक आर्थिक स्थिति, आवासीय पृष्ठभूमि, अभिभावकीय आकांक्षा और उम्मीदें, आदि।
4. सामाजिक पर्यावरणीय कारक इसमें व्यक्तित्व, रवैया, शिक्षण की पद्धति, पाठ्यक्रम, स्कूल के भावनात्मक जलवायु आदि शामिल हैं।

परिचय

बुद्ध के समय में इस लिपि का विस्तृत प्रयोग होता था। अशोक के अधिकतर शिलालेखों में ब्राह्मी लिपि का ही प्रयोग किया गया है। हां, कुछ शिलालेखों में पश्चिम भारत में प्रचलित खरोष्ठी लिपि का प्रयोग भी किया गया है। लेकिन अशोक के समय प्रचलित लिपि ब्राह्मी ही थी। अशोक के बाद ब्राह्मी लिपि में परिवर्तन होना आरम्भ हुआ। शिक्षित लोग लिपि को सुन्दर बनाने का प्रयत्न करने लगे। कलम उठाये बिना अक्षर लिखने की प्रवृत्ति के कारण भी लिपि में परिवर्तन होना स्वाभाविक था। इसके अतिरिक्त शीघ्रता से लिखने के कारण भी लिपि में अनेक परिवर्तन हुए। गुप्त काल में ब्राह्मी लिपि का परिवर्तन रूप गुप्त लिपि कहलाया। उत्तरी भारत में जो परिवर्तन हुए उनमें वर्णों का आकार थोड़ा कुटिल हो गया था। इसलिए इस रूप को कुटिल लिपि की संज्ञा दी गई। इस कुटिल लिपि से शारदा और नागरी दो लिपियां निकलीं। नागरी लिपि का प्रयोग ईसा की 10वीं शताब्दी से माना जाता है। इसी नागरी को 12वीं शताब्दी में देवनागरी लिपि कहा जाने लगा। क्यों? इसका कोई ठोस प्रमाण नहीं मिलता। आज की देवनागरी लिपि, प्राचीन देवनागरी का सुधार हुआ रूप है। भारत में प्रयुक्त होने वाली अन्य लिपियां भी ब्राह्मी लिपि से ही निकली है।

कुछ लोग देवनागरी लिपि की उत्पत्ति खरोष्ठी लिपि से मानते हैं परन्तु यह उनका भ्रम है। खरोष्ठी लिपि विदेशी लिपि थी। विदेशी लिपि होने के कारण भारतवर्ष के धर्म–ग्रंथों में इसका प्रयोग नहीं किया गया, केवल व्यापारी वर्ग में ही इसका प्रयोग किया जाता था और वह भी भारत के उत्तरी पश्चिमी भाग में कुछ शिलालेखों में भी इसका प्रयोग हुआ है। ईसा की तीसरी शताब्दी तक पश्चिमी भारत में इस खरोष्ठी लिपि का प्रचलन रहा। परन्तु तत्पश्चात् ब्राह्मी लिपि की वंशजाओं का ही प्रयोग हुआ।

साहित्य की समीक्षा

प्रामणिक हिन्दी कोष–रामचन्द वर्मा

1. पूर्णतः संशोधित तथा परिवर्धित।
2. कोश को अधिक उपयोगी तथा अद्यतन रूप देने के लिए प्रशासन, न्याय राजनीति वाणिज्य शिक्षा साहित्य तथा विज्ञान के क्षेत्रों में प्रयुक्त पांच हजार नवीन शब्दों को इस संस्करण में सम्मिलित किया गया है।
3. हजारों नये शब्द, हजारों शब्दों के नये अर्थ तथा हजारों नये प्रयोग इस बृहत् संस्करण में बढ़ाये गये हैं।
4. इन सभी शब्दों की आचार्य व्याख्या रामचन्द्र वर्मा की चिरपरिचित, सरल तथा बोधगम्य शैली में।
5. नवीन शोध के आधार पर सैकड़ों हिन्दीं की व्युत्पत्ति का नवनिर्धारण।
6. परिशिष्ट में पाँच हजार अंग्रेजी के उपयोगी तथा महत्त्वपूर्ण शब्दों के लिए प्रयुक्त हिन्दी समानार्थियों का चयन।
7. विद्यार्थी, अध्यापक, लेखक, अनुवादक, संपादक, पत्रकार आदि के लिए अत्यन्त उपयोगी तथा विश्वसनीय आधुनिक संदर्भ कोश।

जी.एल. यादव (2011) ने वर्तमान युग में हिन्दी भाषा की समस्याओं और शैक्षिक उपलब्धियों में आवश्यकता के संबंध में कुछ पहलुओं का अध्ययन किया। मुख्य उद्देश्य हिन्दी भाषा की स्वीकृति, एकाग्रता और शैक्षणिक उपलब्धियों के प्रभाव का अध्ययन करना था। आज–कल संसार में जो भाषाएँ आदर्श रूप में समुन्नत तथा समृद्ध मानी जाती हैं, उन सबकी एक बहुत बड़ी विशेषता यह है कि उनके शब्दकोशों में प्रत्येक शब्द का बहुत ही वैज्ञानिक और व्यवस्थित रूप से सीमाबद्ध और स्पष्ट निरूपण होता है। ऐसा निरूपण होता है कि उसे एक बार अच्छी तरह देख लेने पर उसके अर्थ तथा प्रयोगों के सम्बन्ध में किसी प्रकार के भ्रम या सन्देह के लिए कोई अवकाश नहीं रह जाता। अर्थों के प्रकार के विवेचन से ही भाषा वास्तविक रूप से पुष्ट तथा प्रौढ़ होती है, उसका स्वरूप निखरता है और भाषा सचमुच उन भाषाओं के वर्ग में परिगणित होने के योग्य हो जाती है। हम हिन्दीभाषियों का भी यह प्रमुख कर्त्तव्य होना चाहिए कि हम हिन्दी शब्दों का ठीक और पूरा अर्थ–विवेचन करके उसे भी ऐसे उच्च स्तर तक पहुँचाने का प्रयत्न करें कि वह भी उन्नत भाषाओं के वर्ग में गिनी जाने लगे।

देवनागरी लिपि की विशेषताएं

1. यह लिपि स्पष्ट एवं सुन्दर है।
2. देवनागरी लिपि में प्रायः सभी मूल ध्वनियों के लिए पृथक्–पृथक्

ध्वनि चिन्ह हैं। इस लिपि की यह विशेषता है कि इसमें जैसा बोला जाता है वैसा ही लिखा जाता है और वैसा ही पढ़ा जाता है इस लिपि की ध्वनि तत्व बड़ा ही वैज्ञानिक है।

3. देवनागरी लिपि में स्वरों के स्थान पर उनकी मात्राओं का प्रयोग किया जाता है जिससे शब्द का आकार अपेक्षाकृत छोटा हो जाता है।
4. यह लिपि बाई ओर से दाई ओर को लिखी जाती है।
5. देवनागरी लिपि भारत में प्रयुक्त होने वाली कई अन्य लिपियों – मराठी, बंगाली, गुजराती तथा गुरूमुखी आदि से बड़ा मेल खाती है। राष्ट्र की एकता की दृष्टि से यह अच्छी बात है।
6. इस लिपि में विदेशी ध्वनियों को भी व्यक्त कर सकने की शक्ति है। इस शक्ति के कारण ही यह संसार की सबसे अधिक समृद्ध लिपि है।
7. हमारे देश का मूल साहित्य और संस्कृति इसी लिपि में सुरक्षित है।

देवनागरी लिपि की न्यूनताएं

1. देवनागरी लिपि में अक्षरों की संख्या बहुत अधिक है।
2. कुछ ध्वनियों में इतना कम अन्तर है कि अहिन्दी भाषा–भाषियों को उनके सीखने में बड़ा समय लगता है, जैसे– स, श तथा ष।
3. कुछ वर्णों की बनावट में भी बड़ा कम अन्तर है, जैसे – ब तथा व।
4. स्वरों के लिए प्रयुक्त होने वाली मात्राएं कभी व्यंजनों के पहले और कभी उनके बाद में लगती हैं, जैसे–किस तथा कील।
5. 'उ' तथा 'ऊ' की मात्राएं सभी व्यंजनों के तो नीचे लगती हैं परन्तु 'र' व्यंजन के बीच में लगती है, जैसे – कु, कू परन्तु रु, रू।
6. संयुक्ताक्षरों को सीखना और लिखना कठिन पड़ता है।
7. 'र' के चार रूप मिलते हैं – (र), जैसे – चरम।
8. रेफ उच्चारण के क्रम में नहीं लिखा जाता तभी अधिकतर बच्चे आशीर्वाद के स्थान पर आर्शीवाद लिखते हैं।
9. अनुस्वार जिसके पश्चात् उच्चरित होता है उसके ऊपर लगता है; जैसे – गंगा, घंटा।
10. अक्षरों की बनावट थोड़ी जटिल है।
11. इसके मुद्रण और टंकन में भी थोड़ी कठिनाई पड़ती है।

निष्कर्ष

देवनागरी लिपि की उपरोक्त न्यूनताओं को दूर करने के लिए इस लिपि में सुधार करने की आवाज बहुत दिनों से उठाई जा रही है। एक बार इ, ई, उ, ऊ, ए तथा ऐ के स्थान पर क्रमशः अि, अी, अु, अू, अे, तथा अै लिखने की बात कर कुछ लोगों ने अपनी बुद्धि की जय बोली थी। उत्तर प्रदेश सरकार ने तो लिपि में सुधार करने के लिए लखनऊ में अखिल भारतीय सम्मेलन किया था उसमें लिपि में अनेक सुधारों का प्रस्ताव किया; जैसे – 'इ' की मात्रा व्यंजनों के बाद आधी ऊँचाई को लगाना; जैसे– 'किया' को 'कीया' लिखना और संयुक्ताक्षरों को अलग–अलग हलंत् लगाकर लिखना।

संदर्भ

1. संपूर्णानन्द समाजवाद।
2. समाज दर्शन – महादेव प्रसाद।
3. ज्योति गौरव, हिन्दी भाषा का समर्थन अध्ययन की आदतें, इंडियन जर्नल ऑफ साइकोमेट्रिक एंड एजुकेशन, वॉल्यूम 37, अंक 1, पीपी. 66–67, 2012।
4. रोजा एम सी, सामाजिक समायोजन और शैक्षणिक उपलब्धि विविध शैक्षिक और व्यवहार दक्षताओं वाले छात्रों के लिए एक भविष्य कहनेवाला मॉडल, स्कूल मनोविज्ञान समीक्षा, खंड 35, नंबर 3, पीपी 493–501, 2012।
5. भारती, स्व–संकल्पना, सामाजिक समायोजन और फारसी छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि, अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान और मानविकी खंड, वॉल्यूम की अंतर्राष्ट्रीय समीक्षा 8, नंबर 2, पीपी 50–60, 2012।